पारांजली

पुनर्यात्रा - गीतांजली (रविन्द्रनाथ टैगोर)

डा० कल्पना सेंगर

संपादनःनरेंद्र अग्रवाल

हिन्दी अनुवाद

डा० हरेन्द्र अग्रवाल

प्रकाशक : बंदना चौधरी

प्रकाशन –
प्रथम हिन्दी संस्करण- सितम्बर २०११
वर्तमान संस्करण: जनवरी 2025

प्रकाशक : बंदना चौधरी
प्रकाशक: बंदना चौधरी
प्रथम तल, सी-6, अंबिका नगर,
शक्तिनत, भरूच, गुजरात (392001)
वेबसाइट: resurrectionofdharma.com,

आमुख

जब सितम्बर २०१० में, मै महान कवि रविन्द्रनाथ टैगोर रचित गीतांजली को पढ़ रही थी, तब गीतांजली में वर्णित उस समय की जटिलता, दुखों, निराशा, असहायता के एहसास ने मुझे पीड़ा से भर दिया और मुझे बदले हुए स्वतंत्रा और जिम्मेदारी के परिवेश में इसकी पुनर्यात्रा की इच्छा जागी ।

मुझे महसूस होता कि ऋशि मुनियों के आशीर्वाद, परिवार के योगदान, मित्रों के सहयोग एवं अनगिनत लोगों के शुभाशीष ने मुझे इस देवीय आराधना के गीत (रुक्मणी, राधा, काली) लेखन के माध्यम बनने का मौका दिया।

परांजली (गीतांजली पुनर्यात्रा) के लेखन में सामान्य समझ के लिए आदरणीय रविन्द्रनाथ टैगोर जी के यीट्स डब्ल्यू वी. के द्वारा १९१२ में किये गये अंग्रेजी अनुवाद को (जिस पर रविन्द्रनाथ टैगोर जी को नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया) को ध्यान में रखा। इस दैवीय आराधना के गीत संग्रह में १०३ गीत गीतांजली में लिखे गीतो की पुनर्यात्रा है तथा प्रथम गीत टैगोर जी के दूसरे संग्रह से लिया गया है।

अंत में मुझे इस बात की अपार खुशी है कि इसका हिन्दी अनुवाद मेरे बड़े पापा डा. हरेन्द्र अग्रवाल ने किया है। बड़े पापा का ज्ञान एवं अनुभव मुझसे कहीं बहुत ज्यादा है इसलिए हिन्दी में कवितायें अधिकांश जगह मूल अंग्रेजी से बेहतर आयी है।

इसके लेखन में किसी को न तो नाराज करने की कोशिश की गयी न ही सभी को प्रसन्न करने की। प्रस्तुति जैसे-जैसे वातावरण से लेखन के दौरान आती गयी उसे वैसे ही हम सभी के स्वस्थ, सुखद एवं पवित्र जीवन के लिए प्रेषित किया गया है। दैवीय आराधना के गीत आपके सुखद, स्वस्थ एवं पवित्र जीवन की कामना करते हुए प्रेषित है।

कल्पना सेंगर
०७ मई २०११

गीत वर्गीकरण

क्र०सं०	वर्ग	गीत संख्या
१	रास्ता जागृति का	आरंभ गीत
२	काली	२२, ३२, ४१, ५०, ५३, ५४, ५५, ५६, ६०, ६२, ६४, ६६, ७८, ८२, ८३, ६६, १००, १०१, १०२, १०३,१०४
३	राधा	४, ६, १६, २३, २४, २७, ३०, ३१, ३३, ३४, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ५१, ५२, ५७, ६५, ७३, ७७, ६०,
४	रूकमणी	४०, ६३
५	माँ	६, ३२, ८४, ८६, ८८
६	मंदिर	१, ११, १२, १३, १६, १६, ४६, ८६
७	जीवन लय	७०, ७१, ७२, ७६, ८०, ८१, ८५
८	त्रिदैवी	२, ३, ५, ८, ६, १८, ३६, ६७, ६८, ७६, ८१
६	मृत्यु	८७, ६१, ६२, ६६
१०	प्रकृति	७, २०, २१, २८, ३५, ६६, ८८, ६७
११	कार्य	१४, १५, १७, २५, २६, २६, ३७, ३८, ५६, ७४, ७५, ६३, ६४, ६५
१२	इंटरनेट	६१
१३	चर्मोत्कर्ष	५८, ५६

रास्ता जागृति का

प्रभु के चरणों में पुष्पार्पण के लिए,
मंदिर चलो,
इस तरह तुम अपने ही घर में प्रेम के,
पुष्प और सुगन्ध ही चढ़ाओगे।

प्रभु की वेदी पर द्वीप प्रज्जवलित करने,
मंदिर चलो,
इससे तुम्हारे अपने ह्रदय के पाप और अज्ञान के अंधेरे,
छटने का रास्ता खुलेगा,
हो सकता है कि तुम स्वयं प्रकाशित हो पाओ।

प्रार्थना में अपना शीश झुकाने,
मंदिर चलो,
इससे अपने सहयात्रियों के सामने,
विनम्रता से झुकना तुम सीखेगो।

घुटनों को मोड़े प्रार्थना के लिए,
मंदिर चलो,
इससे तुम मुड़ना सीखोगे,
और स्वयं अपने और दूसरे पद दलितों को उठाना।

अपने पापों के लिए क्षमा मांगने,
मंदिर चलो,
इससे तुम्हारे ह्रदय से एक रास्ता बनेगा,
ताकि तुम उन्हें क्षमा कर सको जिन्होंने तुम्हारे प्रति पाप किया।

मंदिर चलो,
हो सकता है कि एक दिन तुम स्वयं मंदिर बन जाओ,
जहां लोग आते हैं और प्रार्थना करते हैं।

कंपन अनंत

तुम्हारा आनंद ऐसा है,
कि इसने मुझे जीवन दिया है,
इस जीवित घट को तुम बारम्बार,
खाली कर देती हो, और
फिर नई ऊर्जा से भर देती हो।

हाड़, मांस के इस छोटे से जीवन को,
तुमने समुद्र से आकाश तक उठाया, और
इससे प्रतिपल नए संगीत को जीवन दिया।

तुम्हारे अमृतत्व की अनुभूति पर,
मेरा नन्हा हृदय आनंद से धड़कता है,
और इससे असीम कम्पन जन्म लेते हैं,
तुम्हारे अमृतत्व की अनुभूति मुझे,
केवल अपने इसे नन्हे से हृदय में होती है,
युगों गुजरे, और तुम भरती हो, और
अनुभव होती है यह विशेष अनुकम्पा।

त्रिदैवी की अराधना

जब तीन देवियां मुझे उठ खड़े होने का आदेश देती हैं,
मुझे गौरव अनुभव होता है,
मैं उनको देखता हूं,
मेरी आंखों में प्रकाश झलक आता है,
मेरे जीवन में जो भी शोर जो भी प्रदूषण है,
सब एक मधुर संगीत बन जाता है,
हृदय में उनकी प्रशंसा के भावों में पंख लग जाते हैं,
जैसे कि पूरी दुनिया का चक्कर लगाने के लिए उड़ती हुई,
एक आनंदित चिड़िया।

मुझे लगता है तीन देवियों को,
मेरे संगीत में आनंद आता है,
मुझे मालूम है कि एक केवल एक संगीतकार की तरह,
मैं उनके सामने आता हूं ,
और उनके दूर-दूर तक विस्तृत संगीत के पंखों के किनारों को,
छू पाता हूं ,
संगीत के आनंद से जागृत,
मैं स्वयं को भूल जाता हूं ,
और पुकार उठता हूं त्रिदेवी मेरी आराध्य।

त्रिदैवी- रूक्मणी, राधा एवं काली

विन्यास

मेरी शिक्षक,
मैं तुम्हारे गीत विन्यास को अनुभव करता हूं ,
तुम्हारे संगीत की ध्वनि पर दुनिया झूमती है,
तुम्हारे संगीत की जीवन ध्वनि एक आकाश से दूसरे तक फैली है,
तुम्हारे संगीत का पवित्र प्रवाह सारे बन्धनों को तोड़ता,
बहता चलता है।

मेरा हृदय तुम्हारे संगीत में जुड़ जाता है,
इसे अपनी आवाज की खोज नहीं,
मैं बोलता हूं और मेरी वाणी एक गीत में फूट पड़ती है,
ऐ, मेरी शिक्षक,
तुमने अपने संगीत से मेरे हृदय को आप्लावित कर दिया।

जीवन ऐ जीवन

त्रिदेवी हे त्रिदेवी,
जीवन ओ मेरा जीवन,
मैं अपने शरीर को बांधकर रखने का कभी प्रयास न करूंगा,
तुम्हारे जीवंत स्पन्दन मेरी सारी नसों में बहते हैं,
मैं विक्षोभ को भी अपने दिमाग से बाहर रखने का प्रयास न करूंगा,
तुम्हारा विज्ञान तुम्हारा सत्य जिसने,
मेरे मस्तिष्क में सारे विवेक की रोशनी जलाई है,
मैं अपने हृदय से
यहां तक कि पाप को भी हटा देने का प्रयास न करूंगा,

फूल और कांटों में तुम्हारे प्रेम को देखते हुए,
अनुभव करते कि मेरे हृदय की मढ़िया में तुम्हारा सिंहासन है,
तुम्हारी ही शक्ति से मेरे जीवन में ध्येय,
और तुमसे ही कर्म की शक्ति,
यही प्रयास कि मेरे कर्मों में तुम हो प्रगट।

अनथक श्रम

जब भी बैठता हूं मैं तुम्हारी बगल में,
काम पर होऊं या उससे अलग,
मैं तुम्हारी बगल में हुं ,
तुम ही मुझे शक्ति और प्रेम देती हो कि,
अनथक श्रम के इस उद्‌देश्यपूर्ण जगत में,
मेरा काम एक निःप्रयास प्रयास बने।

मेरी खिड़की पर ठण्ड ने दस्तक दी,
और मेरे फलते-फूलते बगीचे में,
मधुमक्खियों, चिड़ियों और तितलियों ने अपना गान शुरू कर दिया,
अब उठ खड़े होने का वक्त है,
दुनिया का सामना करो,
और धर्म के लिए जीवन को समर्पित,
अनथक श्रम के इस उद्‌देश्यपूर्ण जगत में,
इस ध्वनियों से भरे और भारी पड़ने वाले जगत में।

पूजा के लिए फूल

ले लेने के लिए फूल न तोड़ो,
चाहे इसका रंग गहरा हो गंध सुमधुर,
इसका सौन्दर्य सुखद,
ले लेने के लिए फूल न तोड़ो,
तेरी माला में यह शोभा पा सकता है,
लेकिन इसे तोड़ूगा नही,
सृष्टि का सम्मान करो,
सृष्टि का आनंद लो,
पूजा के लिए भी फूल न तोड़ो,
इसे इसके जीवनभर इसकी जगह रहने दो।

मेरा दिल धड़कता है निःशब्द में

मेरे संगीत ने उसके आभूषणों को धारण किया,
अपनी वैभवशाली वेशभूषा और सज्जा में वह सहज,
उसकी सज्जा हमारी एकता को प्रकाशित करती है,
उनकी झनकार उसकी वाणी को मधुर बनाती है।

उसकी उपस्थिति में मेरा हृदय शांति के साथ धड़कता है,
उसके आदेश पर मैं बैठ जाता है,
और अपने जीवन को वैसा बनाता हूं कि जैसा कि त्रिदेवी की इच्छा,
ताकि वही लय बनाए,
प्रकृति की प्रकृति की तरह।

धूल धरती माँ की

राजकुमारों की पोशाकों से सजे बच्चे, गले में,
हीरे जवाहरातों की मालाएं,
वे भी उसकी लीला में सहभागी,
बच्चों को डर नहीं कि उनकी पोशाक फट सकती है,
या कि धूल धूसरित,
बच्चे दुनिया से जुड़े हैं और खेलना चाहते है,

मां, इसमें ही हित है,
यह तो महीनता की स्वतंत्रता है,
जो कि धरती मां की पोशक धूल में,
बच्चे को खेलने की स्वतंत्रता देती है,
मां, इस एक को आम मानव जीवन के इस महान मेले में,
प्रवेश का अधिकार दो।

ओ प्यारे ओ हिस्सेवाले

प्यारे
हिस्से वाले
दैवी को माथे बिठाओ
दैवी की दुनियॉं में
जिम्मेदारी निभाओ
तुम्हारी चिन्ता
दैवी तिरोहित करेंगी
दैवीय आदेश
जीवन रो’’ान करो
प्यार करो, कर्म करो,
तुम्हारे हाथों में
दैवी आशीष भरेंगी ।

जहाँ रहते हैं वीर, सम्माननीय और पवित्रजन

यहां पायदान है,
पर तुम्हारे चरण,
वहां जहां सबसे बहादुर सम्माननीय और पवित्रजन,
जब मैं तुम्हारे सामने झुकता हूं ,
तो मेरा झुकना वहां उस गहराई में पहुंचता है,
जहां तुम्हारे चरण सबसे बहादुर सम्माननीय और पवित्रजनों के बीच विचरते है।

गौरव वहां पहुंचता है जहां,
जहां तुम सामान्यजन के वस्त्रों में,
सबसे बहादुर, सम्माननीय और पवित्रजनों के बीच में,
बिहार करती हो।

मेरे हृदय नें अपना रास्ता केवल वहां के लिए सीमित कर दिया है,
जहां तुम्हारा साथ है,
सबसे बहादुर, सम्माननीय और पवित्रजनों के बीच में।

देखो तुम्हारा भगवान तुम्हारे सामने हैं

तुम भक्ति में हो,
यह मंत्रोच्चारण यह गीत,
और यह माला,
चलने दो,
मंदिर के इस भीड़ भरे प्रकाशित क्षेत्र में पूजा करो,
और अपनी आंखें बंद करो,
और देखो वहां तुम्हारा ईश्वर अपने सामने।

तुम कर्म में हो,
तुम वहां हो जहां कृषक जमींन गोड़ता है,
तुम वहां हो जहां मजदूर मशीन पर काम कर रहा है,
वहां तुम धूप और छाया में,
इस उद्‌देश्यपूर्ण जगत में कर्म करो,
और देखो वहां तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे सामने।

तुम ज्ञान में हो,
तुम वहां हो जहां छात्र अध्ययनरत है,
तुम वहां हो जहां गुरु ज्ञान दे रहा हो,
वहां उनके साथ अध्ययन और जीविकोपार्जन में,
इस निरंतर विस्तारमान जगत में सीखो,
और देखो वहां तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे सामने।

तुम ध्यान में हो,
पुष्प और गंधों के साथ रहो,
तुम वहां हो जहां व्यक्ति अपने एकांत में विराजमान,
वहां जहां परिवार और मित्र समाज में बैठे हैं,
इस उद्‌देश्यपूर्ण जगत में ध्यान करो,
और देखो वहां तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे सामने।

हर कहीं मुक्ति दिखाई देती है,
मेरी शिक्षक ने आनंद के साथ अपने ऊपर,
जगत का आधार सम्हाल रखा है,
तुम ही आधार हो और बुनियाद तुम्हारी है।

उससे प्रार्थना करो, उससे मिलो और उसके साथ खड़े हो,
भक्ति में, कर्म में, ज्ञान में और ध्यान में,
और देखो वहां तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे सामने।

१२

मैं वही हूं जो कि मैं हूँ

तुम भोर की पहली किरण के साथ अपने रथ पर निकलीं,
और तुमने लोकों कि जगमगाहट में अपनी यात्रा की,
बहुत से तारों और ग्रहों के रास्ते हिलते हुए।

यात्रा में लगने वाला समय बहुत है लेकिन रास्ता पक्का,
सबसे सरल रास्ता तुम्हारे सबसे पास,
तुम्हारे दरवाजे पर आने के लिए यात्री को सीधा और सरल होना जरूरी,
दूसरे सारे लोकों में भटकना जरूरी नहीं,
गर्भ गृह में पहुंचे और शांति को प्राप्त करे।

मेरी आंखें दूर-दूर तक भटकती रहीं,
इसके पहले कि मैंने उन्हें बंद करके कहा " तुम यहां हो "
यह प्रश्न और उल्लास अरे कहां ?
तुम सहस्त्र रश्मियों में चमक उठीं,
तुमने सान्तावना की बाढ़ से दुनिया को रोशन कर दिया,
और कहा, मैं वही हूं जो कि मैं हूं।

गीत गाने का समय

वह गीत गाने का समय आ गया,
जो आज तक अनगाया ही रहा,
अपने वाद्यो के तार चढ़ाने और उन्हें मिलाने में ही जीवन गुजर गया,
शब्द सुव्यवस्थित हो गए, धुन बना ली गई,
हृदय में इच्छा है, और मस्तिष्क उसका अनुचर,
फूल खिल गये, बयार बह चली,
इसने उसका चेहरा देख लिया और उसकी आवाज सुन ली,
इसने उसकी धीमी पग ध्वनि सुन ली,
मेरे घर के सामने आराध्य से।

जीवन सी लम्बाई का दिन गुजर गया,
फूलों पर उसका आसन बिछाने में,
दिया जल चुका है,
और यह उसको अपने घर बुला सकता है।

यह उससे मुलाकात की ही आशा में जीवित रहा,
अभिवादन शुरू हुआ,
भेंट होने को है,
गीत गाया ही जाने वाला है।

इच्छायें शून्य एवं मेरी खुशियॉं पूर्ण

मेरी इच्छाएं शून्य हैं और मेरा घट आनंद से पूर्ण,
तुमने मुझे सूक्ष्मरूप से स्वीकृत किया,
और यह संकेत मेरे पूरे जीवन से एकमएक हो गया है।
दिन प्रतिदिन तुम्हारा विज्ञान,
मुझे सरलता के योग्य बनाता है,
तुमने मुझे बिना मांगे सब कुछ दे दिया,
यह आकाश, यह प्रकाश,
यह शरीर, यह जीवन,
यह प्रेम और स्वतंत्रता,
मुझे वासनाओं से बचाते हुए।

ऐसे वक्त थे जबकि यह आलस्य में लटकता जाता था,
और ऐसे वक्त हैं जबकि इसे लक्ष्य को पूर्ण करने की जल्दी है।

तुमने मुझे अपने आपको दे दिया,
और हर दिन तुम्हारी विज्ञान ने,
मुझे पूर्ण स्वीकार के योग्य बनाया,
और मुझे भटकने के खतरे से बचाया।

१५

तेरे गाना गाने के लिए

यह यहां है, तुम्हारा गीत गाने के लिए,
यहां तुम्हारे हाल में इसे पीछे की जगह मिली,
तुम्हारी दुनियां में इसके पास इसके लिए नियत कर्म है,
मेरा जीवन एक उद्देश्य के साथ एक लय है।

जब निष्तब्धता में रात का घन्टा बजे,
अंधेरे मंदिर में मध्यरात्रि,
तब मेरे शिक्षक मुझे अपने सामने खड़े होने और
गीत गाने का आदेश देना,
और जब प्रातः शंखनाद हो युद्ध का
आकर आशीष देना मुझे,

मेरा उद्‌देश्यपूर्ण जीवन

दुनिया के इस त्यौहार में मेरा एक मक्सद है,
और मेरा जीवन धन्य,
मेरी आंखों ने देखा और कानों ने सुन लिया है,
मेरे नासिकापुटों में सुगंध भर गई और त्वचा में संवेदन,
कि इस दावत में रूप सज्जा का काम मेरा है।
मुझे मालूम है कि वक्त आ गया,
जबकि मुझे जाना है और तुम्हारे दर्शन करने हैं,
और देने हैं अपने सारे प्रणाम।

उसकी हथेलियों पर

अपने आपको उसके हाथों में दे देने के लिए,
यह प्रेम की प्रतीक्षा में रत,
लोग त्रिदेवी से सीधी प्रार्थना करते हैं, सीधा उन्हे बुलाते हैं,
इसे शंका नहीं कि वे अपनी प्रार्थना में सही हैं।

बाजार खुला है और जरूरतमंदों के लिए काम किया जा रहा,
और जो अनुग्रह की मांग से आए थे,
वे धन्यवाद सहित चले गए।

और मैं केवल अपने आपको उसके हाथों में दे देने के लिए,
यह प्रेम की प्रतीक्षा में रत।

प्यार मेरे परमेश्वर

बादलों पर बादल घिरते हैं और अंधेरा है,
हे प्रिय,
मुझे अपने घर के भीतर अपने मंदिर में रहने दो।

यह अपरान्ह में व्यस्तता के क्षण हैं,
और मैं उसके साथ,
और इस अंधेरे प्यारे दिवस में,
केवल उसकी उपस्थिति मुझे अच्छी लगती है।

अगर वह मुझे उसका चेहरा नहीं दिखाती,
और वह मुझे पूरी तरह किनारे कर दे,
तब वह कहती है,
कैसे मुझे बरसात के ये लम्बे दिन गुजारने हैं,
आकाश के सबसे दूरस्थ कोने पर टकटकी बांधे,
हृदय उसके अनुभव में लयपूर्ण भटकाते हुए।

१६

संदेश शांति का

अगर तुम न बोलो तो,
मेरा हृदय मौन के सुंदर संदेश से भर जाता है,
और मैं निस्तब्ध सितारों से रोशन रात का आनंद लेता।

सुबह आएगी, अंधेरा छटेगा,
आकाश से सुनहरी रश्मियों से यह संदेश झरता है,
तुम्हारे शब्दों ने गीतों में पंख लगा लिए हैं,
चिड़ियों के हरेक घोसले से,
तुम्हारी लयें फूट रहीं हैं,
तुम्हारे जंगल के हरेक फूल से।

जब कमल खिला

एक दिन जब कमल खिले,
मेरा मस्तिष्क शांत था,
और मुझे मालूम था कि,
मेरी टोकरी फूलों से भर जाएगी।

जब कभी एक आनंद मेरे ऊपर उतरा,
और मैंने पहाड़ी हवा में एक विचित्र सुगंध,
के मीठे सूत्र को अनुभव किया।

वह अपरिभाषित मधुरता,
जिसने मेरे ह्रदय को,
संवेदित होना सिखाया,
और मुझे लगा कि यह बरसात की श्वांस है जो,
अपनी पूर्णता तलाशती है।

मैंने जानी तुम्हारी नजदीकी,
और यह कि वह मेरी है,
और यह सम्पूर्ण मधुरता मेरी,
ह्रदय की गहराइयों में खिली है।

पहाड़ी की प्रतिध्वनि

मुझे अपने कपड़े पहन लेने है,
पहाड़ी पर आलस्य से भरे घण्टे गुजरते हैं,
मेरे लिए बरसात ने धरती को साफ कर भिगो दिया है,
वह चली गई,
और अब इकट्ठे हुए पानी के साथ में इंतजार करता हूं।

पहाड़ी पर हवा की तरंगें ठण्डी हो गई हैं,
और छोटे शिखरों पर हरी पत्तियां कांपती हुई बढ़ती हैं।

किस पूर्णता पर तुम्हारी निगाह है !
क्या तुम्हें हवा में से गुजरते,
कम्पन अनुभव होते हैं,
जिनमें किसी दूसरी पहाड़ी से बहकर आई सीटी की आवाज की ध्वनियां हैं,
और काली मुझे रणक्षेत्र में साथ रहने के लिए बुलाती हैं।

गहरी छाया

ठिठुरन भरी संक्रांति की गहरी छाया में,
रात के मौन की तरह निस्तब्ध गुपचुप कदम धरतीं,
तुम आती हो सारे देखने वालों से बचकर।

आज सुबह ने अपनी आंखें बंद कर लीं,
तेज सतही हवा की निरंतर पुकारों को सुनते हुए,
और हमेशा जागते हुए नीले आकाश पर एक गहरा पर्दा खिंच गया है।

जंगली भूमि ने अपना गीत शुरू कर दिया,
और हरेक घर में हरेक दरवाजा बंद है,
तुम तो एक उजड़ी हुई सड़क पर एक एकाकी पथिक हो,
ओ मेरे सर्वोत्तम मित्र, मेरे प्रिय,
मेरे घर के दरवाजे खुले हैं,
एक यथार्थ की तरह आओ।

तूफानी रात

क्या इस तूफानी रात में यात्रा पर हो,
प्रेम की यात्रा पर मेरे मित्र,
आसमान जैसे भावनातिरेक में दहाड़ता है,
मैंने बार-बार अपने दरवाजे खोले,
और मैं बाहर अंधकार में झांकता हूं ,
मेरे प्रिय!
मैं तुम्हें अपने पास में अनुभव करता हूं ,
और तुम्हें मालूम है रास्ता !

किस शुभ्र और पारदर्शी नदी के किस रोशन किनारे पर,
किस सुंदर वन्य प्रांतर की किस दूरस्थ सीमा पर,
या किस क्षुधा को तृप्त कर देने वाली ऊंचाई से,
तुम अपना रास्ता निकालती हो,
ताकि मेरे पास आ सको,
मेरी प्रिय।

आशिर्वाद दो धर्म के काम के लिए

जब दिन पूरा हो जाए,
जब चिड़ियों का गीत पूरा हो जाए,
तब मुझे बादलों की चादर से घेर लेना,
जैसे कि तुमने धरती को नींद से लपेट लिया,
और हलके से कमल की झपती हुई पंखुड़ियों को शाम ढले बंद कर दिया।

उस यात्री से, जिसका राशन यात्रा से पहले समाप्त हुआ,
जिसके कपड़े सब फट गए,
जिसकी शक्ति क्षीण है,
भय और अहंकार को हटा दो,
और मेरे जीवन को एक फूल की तरह नया कर दो,
तुम्हारी कृपा पूर्ण मुस्कान से,
मुझे धर्म के लिए कार्य करने का वरदान दो।

रात्रि का चादर

इस उखड़ी हुई रात में मुझे सोने दो,
मैं तुम्हारी गोद में तुम्हारे प्रेम को प्राप्त करता विश्राम करूं।

मुझे अपनी पूजा के लिए आधी-अधूरी तैयारी में न झोको,
तुम्ही हो जो दिन के थके शरीर पर रात की चादर ढक देती हो,
ताकि मेरा जीवन प्रातः जागरण की खुशी और ताजगी में नया हो जाए,
और वैसे काम शुरू कर दे जैसा कि तुम चाहो।

एक तारा

वह मेरे पास आकर बैठ गई और मैं जाग गया,
कितनी अच्छी नींद और भाग्यशाली में !
वह तब आई जब रात मौन थी ;
उसके हाथों में उसका एकतारा था,
और मेरा जागना उसकी धुनों से अनुनादित हो गया,
मेरी रातें इस तरह मुझे प्राप्त हुईं,
अरे वह तो हमेशा मेरी निगाहों में है,
उसकी श्वांस मेरी नींद को छूती हुई,
और मुझे अपने एक तारे से जगाने वाली राधा हमेशा सम्माननीय।

प्रकाश ओ प्रकाश

प्रकाश ओ प्रकाश,
कामनाओं की जलती हुई आग को शांत करो।

दिया है और जलती-बुझती लौ,
मेरे दरवाजे पर दैन्य ने दस्तक दी,
संदेश है कि तुम जागृत हो,
आसमान पर बादल छा गए,
बरसात थमती ही नहीं,
मुझे मालूम है कि मुझमें क्या घुमड़ता है,
और उसे मालूम है इसका अर्थ।

एक क्षण में बिजली कौंधी,
और मेरी आंखों में कहीं गहरी कौंध,
मेरे हृदय को वह रास्त मालूम है, जहां तुम्हारे प्रकाश का संगीत बुलाता है।

प्रकाश ओ प्रकाश,
कामनाओं की जलती हुई आग को शांत करो।
बिजलियां चमकती हैं और हवाएं दौड़ती हैं,
शून्य में चीखती हुई।

रात ठीक कालिमा की तरह काली,
घन्टों को अंधेरे में गुजर जाने दो,
जीवन में प्रेम की अग्नि जलाओ,
कामनाओं की जलती हुई आग को शांत करो।

शक्ति स्वतन्त्रता की

शक्ति-शक्ति है,
अगर मैं इस नियम का उल्लंघन करूं तो हृदय में टीस उठती है,
मेरे पास केवल स्वंतत्रता है,
मैं दूसरों के लिए भी यही चाहता हूं ,
केवल स्वतंत्रता ही के लिए मेरा सारा काम।

यह निश्चित है कि अमूल्य सम्पदा तुममे है,
तुम्हारा बोध मेरा सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक है,
धूल और मृत्यु की राख मुझे घेरती है,
मैं अपने घर में भरी धूल को झाड़ता हूं ,
वह मेरे मस्तिष्क में भरी मृत्यु को हटाती है।

मेरी सम्पदा क्षुद्र, मेरे अनुभव शून्य,
मेरी शर्म अनावृत, मेरी क्षमताएं शून्य,
जब कोई सहायता के लिए आता है,
मैं केवल मौन में खड़ा,
ताकि वांछित मिल सके।

खुलापन

जिसे इस दुनिया में अपने नाम से जोड़ता हूं ,
वह चारों तरफ दीवालें खड़ा करने का उद्यम नहीं करती,
हमारे बीच में कोई दीवाल नहीं और आसमान दिनोंदिन साफ होता जाता है।
उसकी ही गहरी छाया में मैं जान पाता हूं अपना वास्तविक स्वभाव।

हमें अपने खुलेपन पर गर्व है,
और हमारे नाम में कोई श्रृंगार नहीं,
और जितना ध्यान मैं रखता हूं ,
मुझे अपने वास्तविकता का बोध होता है।

रास्ता मेरे प्रयास का

अपने हटधर्मी रास्ते पर मैं अकेला और अजनबी,
लेकिन शांत अंधकार में यह कौन है जो मेरे पीछे है,
उसकी उपस्थिति से बचने मैं एक तरफ हो जाता हूं ,
लेकिन उसकी निगाह से बचता नहीं।

वह अपने हाथ से धरती से धूल उठाती है,
जो भी मैं कहता हूं उसमें उसकी मीठी वाणी साथ है,
वह तो मेरे भीतर ही है, मेरा ईश्वर,
उसे कोई शर्म नहीं, लेकिन मैं उस तक आने से हिचकता,
उसके साथ का दरवाजा खोलने से बचता,
वह दरवाजा खोल देती है ताकि दुनिया हमें देखे,
और इस दुनिया में कार्य करें।

मेरी राजकुमारी

राजकुमारी, मुझे बताओ, किसने तुमने बनाया,
तुम्हारी ही शिक्षक ने, राजकुमारी बोली।

मैंने सोचा कि जल और आसमान कि इस दुनियां में,
मैं अपनी सम्पदा लुटाने के लिए स्वतंत्र हो सकता हूं ,
लेकिन धन तो मेरी प्रिय और राजकुमारी का है।

जब नींद छाने लगी,
तो मैं धरती मां की गोद में लेट गया,
और जागने पर पाता हूं कि,
कि स्वतंत्रता ही मेरी सम्पदा में है।

राजकुमारी मुझे बताओ कौन हमें इतने बड़े देश में लाया ?
किसने हमारे देश को इतना महान बनाया ?
हमारे पुरखे राजकुमारी बोली।

मैंने सोचा कि मेरी अजेय कामना दुनिया को मुक्त कर देगी,
और मैं अपने आश्रम में शांत,
इस तरह रात और दिन मैंने काम किया,
इतने विराट कैनवास में ध्यान के साथ।

अंत में जब मेरा काम पूरा हो गया,
और भारत, भारत हो गया,
तो हमनें पाया कि यह कामना भी नहीं रही।

कौन है जो मुझे प्यार करता है

जो इस दुनिया में मुझे प्रेम करते हैं,
वे हर तरह से मेरा साथ देते हैं,
मैं अपने प्रेम के साथ हूं , जो मुझे कर्मरत रखता है।

मुझे याद है तुम कभी भी मुझे अकेला नहीं छोड़तीं,
मुझे याद है कि मेरे कर्म में मैं कभी अकेला नहीं।

दिन गुजरते जाते हैं,
और हम पास आते जाते हैं,
अगर वह अपने काम में मुझे नहीं भी बुलाती,
अगर वह अपने साथ मुझे नहीं भी रखती,
तो भी मेरा प्यार उसके लिए प्रेम करता है।

काली महान हन्ता

जब दिन था तब वह मेरे घर आई,
उसने कहा कि हम यहां खुली जगह रखेंगे,
उसने कहा कि हम अपने ईश्वर की आराधना में स्वयं के सहयोगी बनेंगे,
उसने कहा कि हम अपना हिस्सा कृतज्ञता में दिया करेंगे।

उसने बीचों-बीच स्वयं को स्थापित किया,
और वह शांत बैठी रहीं।

और सबसे अंधकार भरी रात में,
मैंने देखा कि वह मेरी पवित्र मढ़िया आ गईं,
शक्तिशाली।
और उसने मुझे मेरी काली हन्ता को मुझे दे दिया,

उसके ही नाम

मैंने तुझे सबका नाम दिया है,
मैं सब ओर तुझे ही अनुभव करता हूं ,
मैं हर चीज में तुझे ही देखता हूं ,
मैं तुझे ही हर क्षण अपना प्रेम देता हूं ,
मेरा कुछ नहीं जो तुमसे छिपा हो,
मैं तेरी इच्छा से बंधा हूं ,
कि मेरे जीवन से तेरा ही उद्‌देश्य सधे,
और यह तेरे प्रेम का ही बंधन है।

चलो हम काम करें और बनायें भारत

जहां आस्था भय से मुक्त है,
और धर्म सर्वोच्च,
जहां मस्तिष्क हृदय का अनुशरण करता है,
और शरीर शुद्ध,
जहां प्रज्ञा सम्माननीय है,
और कमजोर सुरक्षित,
जहां दुनियां को राज्यों की संकरी सीमाओं में तोड़ा नहीं गया,
जहां सत्य की गहराई से ही शब्द आते हैं,
जहां अनथक श्रम पूर्णता की ओर अपने पंख फैलाए है,
जहां विवेक की शुद्ध सरिता मृत रीतियों के मरूस्थल में खो नहीं गई है,
जहां तुम हृदय को हमेशा आगे की ओर हमेशा विकसित विचार और कर्म में लगाती हो,
वहां जहां धर्म का राज्य है, जहां अधार्मिक को काली मार देती हैं,
जहां रहना स्वर्ग में रहना है,
जहां देश सीमाहीन है,
हे प्रिय आओ हम ऐसे भारत का निर्माण करें।

प्रार्थना देवी से

प्रहार करो, हे देवी प्रहार करो,
अधर्म की जड़ों पर प्रहार करो।

मुझे हमारे दुख और सुख सहने की शक्ति दो,
हमें अपनी घृणा और अपना प्रेम सहने की शक्ति दो।

हमें शक्ति दो कि हम कमजोरों को पराया न मानें,
हमें शक्ति दो दुर्दम ताकतों के सामने खड़े रहने की शक्ति।

हमें शक्ति दो कि हम रोजमर्रा की क्षुद्र घटनाओं से ऊपर उठें,
हमें शक्ति दो कि हम तुम्हारी इच्छा के सामने प्रसन्नता से हों समर्पित।

हमारी यात्रा

मैंने सोचा कि हमारी यात्रा मेरी शक्ति की अंतिम सीमा से शुरू हुई है,
पर मैंने जाना कि तुम्हारी इच्छा का मेरे भीतर कोई अंत नहीं है।

जब जिब्हा पर पुराने शब्द खो जाते हैं,
हृदय से नया ज्ञान फूट पड़ता है,
जब पुराना रास्ता समाप्त हो जाता है,
तब हमारे सामने नया रास्ता खुल जाता है,
जब संचित धन समाप्त हो जाता है,
तब नई निधियां आने लगती हैं।

युद्ध का वक्त आ रहा है,
धर्म की पुर्नस्थापना के लिए।

शांति और उद्देश्य

मेरा हृदय बार-बार दोहराता है,
कि इसे त्रिदेवी चाहिए।
सारी इच्छाएं जो ध्यान हटाती हैं,
दिन रात, वे अब नहीं हैं।

जैसे कि दिन अपने भीतर रात का वर्णन छुपाए रखता है,
वैसे ही मेरे अस्तित्व से पुकार उठती है,
कि मुझे त्रिदेवी चाहिए।

तूफान शांति में समाप्त होता है,
और शांति उद्देश्य में।

कर्म पूर्वता में अपना अर्थ खोजता है,
और पूर्वता अपना अर्थ खोजता है, धर्म में त्रिदेवी में।

३६

शक्ति की देवी

जब हृदय कोमलता से परिपूर्ण हो,
तब मेरे ऊपर शक्तिपुंज की तरह गिरो,
जब जीवन में प्रसाद का अनुभव हो,
तब मुझमें कृतज्ञता का प्रस्फुटन बनो।

चारों तरफ निरंतर कार्य की ध्वनियां हैं,
जो मुझे दूर नहीं देखने देतीं,
तब हे शक्ति की देवी,
मुझ पर अपने प्रेम और ध्यान के साथ आओ।

जब मेरा राजाओं जैसे हृदय मुकुट धारण किए बैठा हो,
अंतरमन में आओ
जब बाधाएँ टूट जायें
तब महारानियों की तरह आओ।

जब स्वतंत्रता कर्म को उपेक्षा से अंधा बना दे,
तब हे पवित्र, हे जागृत देवी,
मेरी साथ अपना क्रोध अपनी आग लेकर आओ।

पापियों के रक्त की बाढ़

हमारे सूखे हुए खेतों में हे देवी,
बहुत समय से बरसात नहीं हुई।

क्षितिज बिल्कुल साफ है,
कहीं थोड़े सी भी बादल नहीं,
दूरस्थ कहीं पानी गिरने का कोई संकेत नहीं।

हे मेरी देवी,
बादलों को भेज दो,
तेज हवाएं हो,
बिजलियां कड़कें,
एक सिरे से दूसरे सिरे तक आसमान थर्राए,
हे मेरी देवी इस हर जगह फैली सूखी सर्दी,
हे मेरी देवी इस जड़ता को वापिस बुलाओ।

हृदय को पूर्ण हताशा से जलाते हुए,
शक्ति के बादल को ऊपर से अपना धनुष तानने दो,
जैसे अपने क्रोधावेश के दिन काली,
अपने धनुष से प्राणों को खींच लेने वाला तीर निकलने दो,
और धरती पर पापियो के रक्त की बाढ़ आने दो।

मेरी राधा

हे राधा वहां पूरी तरह से ढकीं, आसमान में छिपतीं तुम कहां हो,
लोग तुम्हें अलंकृत मंच पर घेरे हैं, तुम्हें प्रार्थना के लिए ले जाते है,
और मैं यहां इन बोझिल पलों में तुम्हारे लिए अपनी भेंट सजाता हूं ,
दर्शक आते हैं और एक-एक कर तुम्हारी अनुमति से अपनी प्रार्थना करते हैं,
दोपहर चली गई, शाम भी जा चुकी है,
रात की छाया में मेरी आंखें नींद से बोझिल,
लोग मेरी तरफ निगाहें डालते, मुस्कुराते हैं,
मैं धन्यवाद से भर गया हूं।

मैं एक राजा की तरह बैठा हूं अंगरखा डाले और,
जब वे विदा लेते हैं, मैं पूछता हूं , कि वे चाहते क्या हैं ?
मैंने आंखें बंद कर ली हैं और मैं मौन हूं।

मैं उन्हें कैसे बताऊं कि मुझे राधा का इंतजार है,
कि उन्होंने आने के लिए कहा है,
लेकिन मैं कुछ कहकर शर्मिन्दा कैसे होऊं,
उनके लिए तो मेरा यह हृदय सुरक्षित है,
और मैं अपने हृदय के रहस्य मैं उन्हे आलिंगन करता हूँ
जमीन पर बैठा मै आकार देखता हूँ
और उनके अचानक आने का अहसास होता
चमकती विजली में स्वर्णरथ से उतरती
दैवी आसन से उतरती
मेरे पास बैठती
सामान्य से इंसान को गर्वीली खु”ी से भर जाती
रथ रुका, भोर थमा, समय गुजरता चला गया
आयोजन पूरे हुए, आपके भोभा में बजता संगीत रुका
मैं तुम्हें ताकता अपने हृदय की धूल झाड़ता चला गया
यह तुम्ही हो जो आका”ा की परछाइयों
में भाांत मेरे हृदय को स्वच्छ रखती है
हे राधा यह तुम्ही हो।

राधा और मैं

शाम को सुगबुगाहट हुई
मैं राधा नौका में होगें
दशों दिशा में भ्रमण करेंगे
अंतहीन तीर्थयात्रा को कौन जानेगा

लहरों से मुक्त दैवी शांति से युक्त
मुस्कुराहट से उन्मुक्त
हवा की सरसराहट से शब्द
अविरल भजन में बहते हैं

समय अभी बाकी है
काम अभी बाकी है
रात जाने को है सूरज आने को है
पक्षी पेड़ो से उड़ने को है
राधा की रात चॉंदनी के साथ
जाने को है, दिन आने को है

प्रतिध्वनि धरती से आकाश तक

दिन जब भूल जाये
तैयारी जब विखर जाये
बेखबर एक कामगार
आफिस मे भूल जाये
राधा तब याद करे
फोन तब बाज उठे
आकाश से सूचना आये
फोन मे भर जाये
बेखबर दुनिया, बिसरी बाते
बचपन के खेल जवानी की खुमारी
दैवी के कदम मेरे प्राथना कक्ष में आते
धरती आकाश में अपनी प्रतिध्वनि सुनाते।

४४

मेरी प्रसन्नता

प्रकाश के पीछे पड़ी परछाइयाँ
ठंड के पीछे पड़ी गर्मी में
सड़क के किनारे
उसकी बातें उसकी प्रतीक्षा
दुखों के पीछे पड़ी खुभी

अनजाने आकाभा से आया
प्रणाम करता उनका दूत
मेरे साथ चलता
विलुप्त होता उनका दूत

मैं अंतरतम से खुभा
तब गुजरती हुई हवा सासों को
सुगंधि से भर जाती

सायं से सबेरे तक
अपने कमरे में, जानता हूँ
देवी दरभा दिखायेगी
खुभियों से भर जायेगी
रात्रि में मुस्कुराता हुआ प्रार्थना में
दैवी की सुगंध को हवा में महसूस करता हूँ।

वह हमेशा **आती है**

मैंने उसके निःशब्द कदमों की आहट सुनी है,
वह आती है, आती है, और हमेशा से आती रही है,
हर क्षण और हर युग में,
हर दिन और हर रात,
वह आती है, आती है, और हमेशा से आती रही है,
कई तरह की मनोदशाओं में मैंने कई कहानियां कहीं,
और उन कहानियों की सारी ध्वनियों ने हमेशा दोहराया है,
वह आती है, आती है, और हमेशा से आती रही है,
ठिठुरन भरी नवम्बर के सुगन्धित दिनों में,
पहाड़ी रास्ते से होते हुए,
वह आती है, आती है, और हमेशा से आती रही है,
जून की गर्म रातों में, जब आसमान साफ है,
वह आती है, आती है, और हमेशा से आती रही है,
एक दुख से दूसरे दुख तक,
उसी के कदमों की आहट,
मेरे हृदय पर पड़ती है,
और उसी के कदमों का हल्का स्पर्श,
मेरी खुशी में पंख लगाता रहा है।

मेरा अस्तित्व

मुझे मालूम है कि कितने पुराने समय से वह मुझसे मिलने पास आती रहीं,
सूरज और नक्षत्र युगों तक उसे मेरे निगाह से छिपा ने सके।

बहुत सी सुबहों और बहुत सी शामों में,
उसकी पदचाप सुनी गईं,
उसका दूत मेरे हृदय में आया है,
और मुझे गुपचुप बुलाता है।

मुझे नहीं मालूम कि मेरे जीवन में इतनी उथल-पुथल क्यों है,
मुझे नहीं मालूम कि मेरे अस्तित्व में इतने आनंद की अनुभूति क्यों है,
ऐसे जैसे मेरे काम के पूर्ण होने का समय आ गया,
ऐसे जैसे कि हवा उसकी मीठी उपस्थिति की गंध से भर गई।

मेरी प्यारी नींद

पूरी रात लगभग उसके इंतजार में गुजर गई,
मैं सुबह मांगता हूं कि वह अचानक से मेरे कमरे में आ जाए।

और जब मैं सो गया हूं ,
मित्रों उसके लिए रास्त खुला छोड़ दो,
उसे रोको नहीं,
अगर उसकी पदचाप मुझे जगा नहीं देती,
तो मुझे सोने ही दो।
प्रार्थना है कि मुझे मेरी नींद से,
शोर करती हुई हवाएं न उठाएं।

सुबह की रोशनी के त्योहार में हवाओं को दंगा,
नीचे मुझे बिना छेड़छाड़ के सोने दो,
तब भी जबकि मेरी राधा अचानक मेरे दरवाजे पर आ जाए,
ओ, मेरी नींद मूल्यवान नींद जो केवल जाने के लिए उसके ही स्पर्श का इंतजार करती है,
ओ, मेरी बंद आंखें जो केवल अपनी पलकें खोलेगीं,
उसकी मुस्कान की रोशनी के लिए,
जब वह सामने खड़ी हो।

नींद के अंधकार से निकलते हुए एक स्वप्न की तरह,
उसे मेरी आंखों के सामने आने दो,
सारे प्रकाश और सारे रूपों के प्रथम की तरह,
मेरी जागृत आत्मा के लिए आनंद की पहली घडी
उसके दर्शन से आने दो
तब मेरा मुझमें लौटना, उसमें मिल जाना है।

मंदिर की प्रार्थना

सबेरे की शांति
मंदिर की घंटियों मे समा गयी
रास्ते पर फूलों में छा गयी
सबेरे की शांति

लालिमा की दौलत
बादलों मे बिखर गयी
ताजगी की सुगंध
हवा में विखर गयी

हम घर में
प्रकृति से बेखबर
भजनों प्रार्थनाओं से दूर
आफिस के बाहर ही बिखर गये

शब्दों से परे मुस्कुराहट से दूर
रास्ते में इधर उधर देखे बिना
जल्दी बाजी करते हुये
तेजी में बिखर गये

सूरज सिर पर
बतखें छाया पर
पत्तियॉं नाचते
ठंडी हवा में बिखर गयी

वाहक बच्चा उन्नींदा से
सीमेंट फ''ी पर सपनों में बिखर गया
मैं पंखे के नीचे
रेलगाड़ी के बर्थ पर
थकावट में बिखर गया

मेरे सहयोगी मुझ पर हॅंसे

और अपने घमंड में बिखर गये
पीछे मुड़े बिना कंपनियाँ बदलते हुये
कई देशों में बिखर गये
मेरे सहयोगी सूदूर धुधलके में बिखर गये

सारा श्रेय तुम्हारा
मेरे जीवन पथ के मेजबान
मजाक और मर्म ने
मुझे जीवंत बनाया
मैने अर्पण किया
अपने अंतरतम को अपनी जीवंतता को
मैने अर्पण किया अपने उज्जवलता को

सुरज की लालिमा से सिला हुआ
स्वर्ण से लिखा हुआ
मेरी यात्रा का वर्णन मुझे याद है
माँ मेरा सर्वस्व
तुम्हारे चरणों में

नीद से जागने में
आखों को खोलने में
राधा की मुस्कुराहट में
मेरे मौन को मुक्ति मिलती है
मेरा डर, रास्ता कठिन है, रास्ता जटिल है
राधा की मुस्कुराहठ से बिखर गया

भूमण्डल के कम्पन

तुम अपने सिंहासन से उतरीं,
और मेरे दरवाजे पर खड़ी हो गईं।

मैं एक कोने में बिल्कुल अकेला अनुभव कर रहा था,
और यह अनुभव तुमने जान लिया,
तुम अपने सिंहासन से उतरीं,
और मेरे दरवाजे पर खड़ी हो गईं।

तुम्हारे राज प्रसाद में बहुत से लोग हैं,
और वहां हर समय गीत गाए जाते हैं,
लेकिन इस अनजान युवा की सरल अनुभूति पर तुम्हारा प्रेम कृपालु हुआ,
तुम्हारी एक छोटी सी अनुभूति
भूमंडल को झंकृत कर गयी, मंदिर में थोड़े से प्रसाद के लिए
तुम अपने सिंहासन से उतरीं,
और मेरे दरवाजे पर खड़ी हो गईं।

रानियों में रानी

मैं एक लड़की से दूसरी को चाहता चला गया,
कहीं दूर एक सुंदर स्वप्न की तरह सुनहरा रथ प्रगट हुआ,
मुझे मालूम था कि रानियों की यह रानी यह कौन है !

आशाएं उठीं और लगा कि मेरे अकेलेपन के दिन अब गए,
मुस्कान की प्रतीक्षा में मैं खड़ा रहा,
क्योंकि उसके चेहरे से हर ओर प्रेम फैल रहा था।

रथ वहां रुका जहां मैं खड़ा था,
मुझ पर दृष्टि पड़ी,
वह एक मुस्कान के साथ नीचे उतरीं,
और लगा कि मेरे जीवन का प्रेम,
अंततः आ गया।

अचानक उन्होंने मेरी तरफ अपना दाहिना बढ़ाया,
और कहा 'तुम मुझे क्या दोगे' ?
एक प्रेमी के सामने यह हथेली का खोलना,
महारानियों जैसी यह कैसी चुहल थी !
मैं किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा रह गया,
और फिर मैंने अपने हृदय से प्रेम की सबसे क्षीण मुस्कान निकालकर,
उन्हें दे दी।

आश्चर्य दिन की समाप्ति पर,
मैंने अपने आपको कमरे में खोला और पाया,
मुरझाए हुए चेहरे पर क्षीण लालिमा,
लगा कि उनके हृदया को मुझे सब दे देना है।

रानी दैवी

रात गहरी हो गई,
हमें लगा कि सारे अतिथि आ गए,
घर के सारे दरवाजे बंद कर दिए गए,
किसी ने कहा कि रानी को आना है,
कुछ हंसे और बोले ’ऐसा नहीं हो सकता !
ऐसा लगा कि दरवाजे पर दस्तके थीं,
कुछ बोले कुछ नहीं बिल्ली है,
उन्होंने रोशनियां बुझा दी और वे लेट गए,
कोई बोला ’यह तुम्हारा संदेशवाहक !
वे हंसे और बोले ’नहीं बिल्ली !

मध्यरात्रि में एक आवाज आई,
उन्होंने सोते-सोते सोचा कहीं दूर बिजली कड़की है,
धरती हिली और दीवालें थरथराईं,
किसी ने कहा यह चक्कों की आवाज है,
वे उनीदे बड़बड़ाए नहीं बादलों की गड़गड़ाहट !
रानी आ चुकी थीं,
लेकिन रोशनियां कहा हैं,
उनको बैठालने के लिए सिंहासन कहां ?
शर्म ! घोर शर्म !
हाल कहां है, सज्जा कहां ?

वे बोलीं यह शोर किस लिए !
मेरा बांहें खोलकर स्वागत करो,
खुले हृदय से मुझे रास्ता दो।

दरवाजे खोल दो शंख घड़ियाल बजने दो !
गहरी रात में रानी ने हमारे रिक्त स्वप्निल घर में प्रवेश किया है।

आकाश में बिजलियां कड़कती हैं,

अंधेरा कांप उठा,
पूजा के लिए चटाई लाओ इसे आंगन में फैला दो,
तूफान के साथ अचानक,
भय पैदा करने वाली रात की मेरी रानी आ गईं।

काली तलवार के साथ

मैंने सोचा कि मैं उनसे मांगू ,
लेकिन साहस नहीं हुआ,
उनके गले में गुलाब की गंगा
इस तरह मैंने सुबह का इंतजार किया,
जब वे चलीं गईं,
कमरे में एक नई सुगंध मिलने तक,
और प्रातःकाल एक प्रेमी की तरह मैंने इक्की-दुक्की पंखुड़िया तलाशीं।

अरे, यह मुझे क्या मिल गया ?
तुम्हारे प्रेम की कैसी भेंट ?
कोई फूल नहीं,
सुगंधित जल का कोई घट नहीं,
यह तो अपनी तलवार के साथ स्वयं काली,
लौ की तरह दमकती,
बिजली के प्रहार की तरह भारी।

खिड़की से सुबह की नई धूप आती है,
और कमरे में फैल गई है,
सुबह की चिड़ियां चहकती हैं,
और पूछती हैं 'तुम्हें क्या मिल गया' ?
नहीं फूल नहीं, सुगंधित जल का कोई घट नहीं,
यह तो काली हैं भयावह देवी,
वे बैठी हैं और धन्यवाद और आश्चर्य में चुहल करतीं हैं,
राधा की यह कैसी भेंट,
इन्हें छिपाने की लिए कोई जगह नहीं,
मैं इसे पाकर आनंदित हूँ,
और मुझे शक्ति का अनुभव होता है,
जब मैं इसे सिर से लगाता हूं धड़कन होती है,
क्या पापियों की हंता का यह सम्मान मैं अपने हृदय में न रखूं ,
राधा की यह भेंट,

अब इस दुनियां में मेरे लिए कोई चिंता शेष नहीं,
अपने हर संघर्ष में हम जीतेंगे,
राधा ने मेरे साथ के लिए काली को छोड़ दिया,
और मैं अपने जीवन से उन्हें सम्मानित करूंगा।

अपनी तलवार के साथ मेरी चिंताएं काट देने के लिए काली हैं,
और अब मेरे लिए दुनियां में कोई चिंताएं शेष नहीं,
और अब से मैं सारे क्षुद्र अलंकरण छोड़ता हूं ,
हे मेरे हृदय के प्रेम,
अब मेरे लिए कोनों में प्रतीक्षा है और चिंताएं नहीं,
अब और चाटुकारिता नहीं और अतिरिक्त मिठास नहीं।

राधा ने तलवार धारी काली को मेरे साथ के लिए दिया है,
अब मेरे लिए लड़कियों की गर्माहट नहीं !

विध्वंस की दैवी

हीरों से जड़ा, अनेक रंग के जवाहरातों से सुघढ़ता से गढ़ा,
तुम्हारा कंगन सुंदर है,
कहीं ज्यादा सुंदर है तुम्हारी तलवार,
और चमकती हुई उसकी धार,
गरुण के पंखों की तरह फैली,
सूर्योदय की रक्ताभ लालिमा में सन्नद्ध,
मृत्यु के प्रहार के ठीक पहले दर्द के अतिरेक में,
जीवन के अंतिम प्रतिउत्तर की तरह यह कांपती है,
एक तेज चमक के साथ जागतिक संवेदना के जल जाने,
की शुद्ध ज्वाला से चमकती,
तुम्हारा कंगन सुंदर है,
चमचमाते हीरों से जड़ा,
उसकी तलवार, ओ ध्वंस की देवी,
सुंदरता से गढ़ी हुई,
पापियों को भयाक्रांत करती।

मेरे साथ आओ

मैंने सब कुछ उनसे मांग लिया,
उनके कानों में अपना नाम कहने की हिम्मत नहीं,
जब वे विदा हुईं मैं मौंन खड़ा रहा।

पार्क के किनारे में अकेला था,
तब जबकि पेड़ों की परछाइयां लम्बी होने लगीं,
सारे लोग अपनी संध्या सैर पूरा कर,
अपने घरों की ओर चले,
उन्होंने मुझे पुकारा और चिल्लाए, आओ,
शाम अब रात में मिलने लगी है,
लेकिन मैं कुछ क्षण के लिए वहीं अटका रहा,
अनिश्चित भावों में डूबा हुआ।

जब वह आईं मुझे उनकी पदचाप सुनाई नहीं दी,
मेरे ऊपर पड़ने वाली उनकी आंखें आनंदपूर्ण थीं,
वह धीमें से बोली,
मैं एकाकी पथिक हूं ,
मैं अपने कार की ओर बढ़ा,
मैंने उनके हाथ को अपने हाथों में लिया,
ताकि हाथ मिलाऊं और उनके हाथों का चुम्बन लूं ,
सिर पर हार्न बजते रहे,
किसी अन्जान जगह से संगीत की स्वर लहरियां आईं,
सड़क के मोड़ से फूलों की सुगन्ध।

हम मौंन में शब्दहीन खड़े रहे,
न हम बोले, न हमने मांगा,
हकीकत में हमने अपने लिए क्या किया,
कि हमें सुमरन बना रहे,
यह स्मृति की मैं हाथ मिला पाया,
उनको चुम्बन ले पाया,

हाथों मेरे हृदय में रही और इसे अपनी मधुरता में आवृत किए रहे।

रात काफी हो चली,
गायक की आवाज थक चुकी,
चारों ओर संगीत की स्वर लहरियां,
और मैं बैठा हुआ देखता हूं, और देखता हूं ।

श्रम करो, जागो

हमारे हृदय को आलस्य घेरे है,
और हमारी आंखों में अभी भी नींद भरी है,
क्या हमारे पास तक वाणी नहीं पहुंची ?
कि कांटों के बीच में अपनी महिमा में फूल सिंहासन पर बैठा है,
श्रम करो, जागो ! समय को व्यर्थ न गवाओ !

पथरीले रास्ते के अंत में,
प्रेमपूर्ण एकांत की दुनिया में,
मेरी काली निपट अकेली,
उनको धोखा मत दो,
श्रम करो, हे जागृत !
क्या हुआ अगर आसमान फटता और कांपता है,
अपरान्ह के सूरज की धूप जलाती है,
क्या हुआ जो जलती हुई रेत अपने प्यास के घेरे से घेरती है,
क्या तुम्हारे हृदय में वहां गहरे कोई आनंद नहीं,
तुम्हारी हरेक लीला में,
क्या सड़क की शंखध्वनि दर्द के मीठे संगीत में न फूट पड़ेगी ?

आनंद की अंतहीन लीला

इस तरह, तुम्हारा ही आनंद है जो मुझमें भर गया है,
इस तरह, राधा मुझ तक आईं हैं,
एक सारी रानियों की रानी,
अगर मैं न होता तो उसका प्रेम फिर कहां होता ?
उन्होंने मुझे उनकी सारी सम्पदा में साथी बनाया,
मेरे हृदय में उनकी खुशी की अंतहीन लीला है,
मेरे जीवन में उनकी इच्छा रूप लेती है।

इसके लिए, रानियों की इस रानी ने,
अपने सौन्दर्य में खुद यह तय किया है कि,
मेरे हृदय पर राज्य करे,
और इसके लिए उनका प्रेम उनके प्रेमी के प्रेम में मिला जाता है,
और तुम हो, पूर्ण मिलन में।

ऊर्जा तुम्हारी ऊर्जा

ऊर्जा, तुम्हारी ऊर्जा,
विश्वव्यापी ऊर्जा,
पलको को स्पर्श करती, हृदय को आल्हादित करती रोशनी !
वही ऊर्जा, मेरी प्रिय,
मेरे जीवन के केंद्र में नृत्य करती है,
वही मुझे छूती है, मेरी प्रिय।

तुम्हारे प्रेम की सरगम से,
आसमान खुलता है,
हवा जंगली होकर भागती है,
धरती पर हास्य बिखरता है,
तितलियां नदी पर अपनी नौकायन करती हैं,
ऊर्जा की तरंगों के शिखर पर चम्पा और चमेली,
फूटती हैं।

हरेक बादल पर ऊर्जा रोशनी की तरह कड़कती है,
और अनगिनत रत्न बिखेर जाती है,
घास के तिनकों पर मोती चमका जाती हैं,
सोन नदी के किनारे डुबो जाती है,
खुशी की बाढ़ का ओर छोर नहीं,
और आनंद बेरोकटोक बढ़ता है।

खुशी के रूप में

हमारे गीतों में खुशी के सारे रूपों को मिल जाने दो,
वह खुशी जो भीतर तूफान की तरह उठती है,
सारे जीवन को हास्य में हिलाती और जगाती,
वह खुशी जो लाल कमल पर शांत बैठी है,
और वह खुशी जो अपनी सारी सम्पदा,
धरती पर बिखेर देती है,
और एक शब्द भी नहीं कहती।

प्यारी बेटी

हां मुझे मालूम है, यह काली के प्रेम के अलावा कुछ नहीं,
ओ प्रिय बेटी की तरह मेरे हृदय,
यह नाचती हुई रोशनियां,
और मेरे माथे पर यह शीतल हवा, और कुछ नहीं,
बस काली का प्रेम है,
प्रकाश में मेरे हृदय को भर दिया,
यह उनका संदेश है,
उनका चेहरा नीचे की ओर झुकता है,
उनकी आंखें मेरें आखां को देखतीं,
और मेरे हाथों ने उनके चरण छू लिए हैं।

इंटरनेट की दुनिया

इंटरनेट पर अंतहीन दुनिया के युवा मिलते हैं,
सिर के ऊपर अंतहीन स्थिर आकाश,
और पैरों के नीचे बेचैन घूमती हुई धरती।

इंटरनेट पर अंतहीन दुनिया के युवा मिलते हैं,
उनकी चेटिंग उनके मैसेजेस।
वे शब्दों से अपने स्वप्न बनाते हैं,
अर्थहीन मैसेजेस से वे चेट करते हैं,
टूटे हुए शब्दों से वे अपनी योजनाए बुन रहे हैं,
और मुस्कुराते हुए उन्हें विराट खुलेपन में फ्लोट कर रहे हैं।
वैश्विक इंटरनेट पर युवा अपना खेल खेलते हैं,
उन्हें टाइप करना नहीं आता,
उन्हें लिखना नहीं आता,
ज्ञान के खोजी ज्ञान के लिए आते हैं,
मैसेन्जर्स अपनी साइटों पर मेल करते हैं,
जबकि नए तो सिर्फ उद्धरण इकट्ठे करते हैं,
उन्हें फिर से भेज देने के लिए,
वे छिपी हुई सम्पदा के खोजी नहीं।

नेट पर लेखों की भीड़ लग गई है,
और नेट गर्ल्स की फीकी मुस्कुराहटें
झटके देते भेद, अल्हडों को बेकार राग सुनाते
अध्यापक पर्दे का प्रयोग अल्हडों के रिझाने में करते
और नेट गर्ल्स की फीकी मुस्कराहटे अल्हडों को रिझाती
इंटरनेट पर अंतहीन दुनिया के युवा मिलते हैं
वायरस वेरोकटोक नेट में घूमता
अनजान सिग्नल से कम्प्यूटर टूटता
टूटते हुए अपनो से युवा खेलते
इंटरनेट पर अंतहीन दुनिया के युवा भव्य समागम करते
इंटरनेट पर अंतहीन दुनिया के युवा मिलते

काली की आखें

कोई नहीं जानता कि काली की आंखों पर तैरती हुई नींद
कहां से आती है ?
उसके सोने पर शिशु के होठों पर आ गई मुस्कुराहट,
कौन जानता है कहां पैदा हुई थी ?
शिशु के हाथ पैरों पर पुलकती मधुर, कोमल, ताजगी,
क्या कोई जानता है कि यह कहां छिपी थी,
वह शक्ति जो मस्तिष्क और हृदय से उद्भूत होती है,
कौन जानता है कि यह कहां से आती है ?
शक्ति,
अपने सारे रूपों में प्रतिबिम्बित,
नींद, मुस्कान और मधुर कोमल ताजगी,
और शक्ति जिस दिशा की ओर काली की गति है।

चित्रों के रंग

जब मैं तुम्हारे लिए रंग-बिरंगे कपड़े लाता हूं ,
मेरी बच्ची, मैं समझ जाता हूं कि कैनवास पर इतने रंग क्यों फैले हैं।

जब मैं तुम्हें हंसाने के लिए बोलता हूं ,
तो मैं समझ जाता हूं कि धुनों में इतने चमत्कार क्यों हैं,
और क्यों बयारें अपनी अनुभूति ध्यान से सुनती हुई राधा के हृदय में,
भेज देती हैं।

जब मैं तुम्हें हंसाने के लिए बोलता हूं ,
और तुम्हारे स्वीकार करने वाले हाथों में चाकलेट रखता हूं ,
तो मैं समझ जाता हूं कि शहद इतनी मीठी क्यों हैं,
और क्यों गन्ने में रहस्यपूर्ण तरीके से इतना मीठा रस भरा जाता है,
तुम्हारे स्वीकार करने वाले हाथों में चाकलेट रखता हूं।

जब मैं तुम्हारे हाथों को चूमता हूं ,
कि तुम मुस्कुराओ मेरी बच्ची,
तो मैं निश्चित ही समझ जाता हूं कि,
मां के हाथों से कैसी खुशी बहती है,
और कैसी खुशी है जो रुकमणि मुझे देती है।
जब मैं तुम्हें सान्तावना देने के लिए चूमता हूं मेरी बच्ची।

वे नही जानते

जाने अनजाने सखाओं के
विराजे सब के सिंहासन पर
दूरस्थ जनों को पास बुलाये
अनजनी लड़की को बहन बनाये

असहज हो जाते हैं वह सभी
जब शरणागत शरणस्थली से जाते है
भूलते हैं सभी, कि नये भी यहॉं, पुराने भी यहॉं
और बीच में काली हैं कहीं

जीवन मे,ं इस दुनिया में उस दुनिया में
इसने जब भी नेतृत्व किया
नेतृत्व में काली ने सबका कल्याण किया
जो इसको जाने, सब जाने
यह ऐसी भक्ति, दैवी देती हैं अपने भक्तों को
और आनंद ही आनंद से भर देती हैं

देवी भारत को रोशनी दो

गंगा के किनारे ऊंचे पुलों के बीच में मैंने राधा से पूछा,
अपने दिए को अपनी ओढ़नी से छिपाती तुम कहां चली ?
मेरा देश पूरा अंधकार में घिरा है पूरा भ्रमित !
भारत को अपनी रोशनी दो !
उन्होंने क्षण भर के लिए अपनी काली आंखें उठाईं,
और मुझे कनखियों से देखा,
'मैं जलधारा पर अपना दीप जलाने
गंगा के पास आई हूं ,
तब जबकि आकाश में तारा उगा,
मैं ऊंचे पुलों के बीच अकेला खड़ा रहा,
और उनके दिए की मद्धिम लौ को,
गंगा पर एक सितारा बनते देखता रहा।

गिरती हुई रात की चुप्पी में
मैंने राधा से पूछा, मेरी शिक्षक,
तुम्हारी सारी रोशनिया प्रकाशित हैं-
तब फिर तुम अपने दिए के साथ कहां जा रही हो ?
मेरा सारा देश अंधकार से घिरा है और भ्रमित,
भारत को अपना प्रकाश दो,

उन्होंने क्षणभर के लिए अपनी काली आंखें उठाईं,
और विचारमग्न बोलीं,
मैं तो चेतन्यों को अपना दीप समर्पित करने आई हूं ,
मैं खड़ा रहा और मैनें उनके प्रकाश को भ्रम में अर्थ दिखाते देखा।

अमावस्या की अर्धरात्रि के अंधकार में मैंने राधा से पूछा,
अपने हृदय के पास दीप लिए तुम्हारी खोज क्या है ?
मेरा सारा देश अंधकार से घिरा है और भ्रमित,

भारत को अपना प्रकाश दो,
वे क्षणभर को रुकीं,
वे हंसी और अंधेरे में उन्होंने मेरे चेहरे पर निगाह टिका दी,
मैं अपनी रोशनी लाई हूं , उन्होंने कहा,
ताकि तुम्हें अंधेरे में मार्ग मिल सके,
मैं खड़ा रहा, उनके चरणों में प्रणाम करते।

६५

जीवन की छलकती ख़ुशी

मेरे जीवन के लबालब भरे पैमाने से,
तुम कौन सा दिव्य पेय बनाती हो ?
मेरी लेखिका क्या मेरी आंखों से अपनी सृष्टि को देखना,
तुम्हारी लीला है ?
और क्या मेरे कानों के दरवाजे पर शांत खड़ी होकर,
तुम अपना ही सनातन संगीत सुनती हो ?

उनकी दुनिया मेरे हाथों से शब्दों को बुन रही है,
और उनकी खुशी शब्दों को अर्थ देती है,
उन्होंने अपने आपको मुझे दे दिया,
ताकि उनकी कुदरत में रंग भर जाएं।

जीवन के केन्द्र में

वह जो हमेशा मेरे जीवन के केंद्र में हैं,
रात में और दिन में,
वह जिन्होंने कभी अपने आपको सार्वजनिक नहीं किया,
वही मेरी शक्ति हैं और मेरी शिक्षिका,
और मेरे कार्य से आवृत मेरी देवी।
शब्दों ने उन्हें फुसलाने का प्रयास किया लेकिन हार गए,
आग्रहों ने उन तक अपनी बाहें फैलाईं लेकिन व्यर्थ।

उनकी इच्छा है कि वे मुझ तक आती हैं,
उनकी बुद्धिमत्ता है कि वे मुझे अपना शिष्य मानती हैं,
मित्र और प्रेमी।

मैं जगह-जगह भटका,
रुकमणी को अपने जीवन के केंद्र में रखे,
और उनके ही चारों ओर उत्थान और पतन है,
मेरे जीवन की वृद्धि और उसका विखराव।

मेरे विचार और कार्य में,
मेरी नींद और स्वप्न में,
उन्हीं का राज्य, उन्ही का शासन।

बहुतेरी महिलाओं ने दस्तक दी,
और उनकी जगह मांगी,
लेकिन हताशा से वे दूर हुईं,
दुनियां में काली हैं जिन्होंने हमे देखा है,
वे ही हम में रहीं,
हमारे लिए दु’’मनों को मारती हुईं।

उसकी कला उसका विज्ञान

आकाश उसकी कला, विज्ञान उसका घोसला
ओ देवी
प्यार उसकी कला जीवन उसका विज्ञान
बच्चा उसका विज्ञान सुन्दरता उसकी कला
वर्तमान उसकी कला है भविश्य उसका विज्ञान
विखराव उसका विज्ञान सृजन उसकी कला
कदम उसकी कला रास्ता उसका विज्ञान
पर वहां जहां अंतहीन आकाश फैला है,
जहां न दिन है न रात न हीं रूप न रंग,
न्याय और नेतृत्व के लिए, शक्ति काली की कला है,
और थामें रखने के लिए शक्तिशाली हाथ राधा की विज्ञान।

तुम्हारी ऊर्जा

मेरे इस अस्तित्व में ऊर्जा आती है,
काम करने के लिए,
और उनके चरणों तक वापिस पहुंचने के लिए।
अपनी कृपा में तुम छोटी सी समस्या को घेर देती हो,
और इसे अनगिनत अनुभवों का स्त्रोत बना देती हो,
और बहुतेरे रंग जिनकी आभा सतत बदलती।
तुम्हारी ऊर्जा इतनी हलकी, इतनी क्षणभंगुर, कोमल और सूक्ष्म,

हे पवित्र, तुम्हारी ऊर्जा मुझ पर आती है,
ताकि मैं तुम्हारा काम करूं,
और काली के साथ चल सकूं।

जीवन धारा

जीवन की वही धारा,
जो दिनरात मुझमें से बहती है,
वही दुनियां में बहती है और लोगों को नृत्य कराती है,
यही जीवन है जो घास और वृक्षों में,
जलचर और चिड़ियों में,
यहां जीवन जो समुद्र में उतराता है,
धरती पर तैरता और हवा में चलता है।

जीवन से भरी इसी दुनिया का स्पर्श,
हमारे अस्तित्व को महिमामंडित करता है,
और आत्मगौरव सशरीर नृत्य करतीं त्रिदैवी से मूल्यवान बनता है।

सृजन के क्रम एवं क्रमबद्धता

तुम इस धुन की खुशी से खुश हो,
तुम इस अराजकता में और आने वाली सृष्टि में खुश हो।

सारी चीजें क्रमानुगत,
वे न तो दौड़ती हैं न रुकतीं,
सारी चीजें क्रमानुगत,
कुछ भी संयोग नहीं,
कुछ भी अकारण नहीं,
कुछ भी दुर्घटना नहीं,
कुछ भी भावुकता नहीं,
सभी चीजें क्रमानुगत,
तुम इस क्रमबद्धता के आनंद से आनंदित हो,
तुम इस धुन की खुशी से खुश हो,

राधा औा काली

सभी चीजें लीला हैं,
लीला में लय है,
मौसम आते-जाते हैं,
कारण आते-जाते हैं,
जीवन आता-जाता है,
लेकिन तुम्हारी लीला चलती ही चली जाती है।
बूंद समुद्र में गिरकर समुद हो जाती है,
बूंदों को गिरा दो और समुद्र बने रहो,
पृथक हुआ जीवन करोड़ों धुनों में,
तुमने अपने से ही बिलग होकर हममे शरीर ग्रहण किया।

सारे आकाश में अनेकों धुनों में तुम्हारा गीत ध्वनित,
समस्त बांझ जीवन एक सूत्र में बंध गए,
राधा और काली की महिमा आकाश को घेरती है,
सामूहिक धुन से सारी हवा स्पन्दित,
राधा और काली के प्रकाश से युग गुजरते हैं।

वह ही तो है

वह ही तो है, अंतरतम में जो जगाती है
वह ही तो है जो गहरे में छू जाती है
डसका जादू आखों से ऑखों में
हृदय से हृदय में आ जाता है

वह ही तो है जो माया का जाल बुनती है
पीले गुलाबी रंगो से
सोने हीरों पन्नो से
वह ही तो है जो माया फैलाकर, माया हर लेती है

उसका जादू उसका स्पर्श
दिन आते हैं उम्र निकलती है
उम्र बीतती युग निकलते
और उसका जादू
सम्मोहित करता सदा
बहुत से नामों में बहुत से कामों में
आनंद के अनगिनत रंगों में
वह ही तो है

मुक्ति

न तो त्याग में मुक्ति है,
न ही हजारों बंधनों में रहते स्वतंत्रता की अनुभूति में।

तुम मेरे प्याले में हर बार,
अलग-अलग स्वादों, रंगों और गंधों वाली शराब डालती हो,
और इसे ऊपर तक भर देती हो।

सहस्त्र दीपों को प्रज्जवलित करो,
और उन्हें मंदिरों में रख दो,
तुम्हारी दृष्टि, तुम्हारे शब्द और तुम्हारे स्पर्श का आनंद,
मेरा भ्रम तुम्हारे प्रकाश में जल गया,
मेरी वासना आनंदमय पल्लवित हुई।

पृथ्वी पर रोशनी

रात गई, धरती पर प्रकाश है,
यह वक्त है अपना काम पूरा करने के लिए,
मुझे ऑफिस जाना है,
सुबह की हवा बहती है,
चिड़ियों की कोमल आवाजें,
मुझे बाहर बुलाती हैं,
मुझे मालूम है कि मुझे वापिस आना है,
मुझे मालूम है कि किससे मिलने का संयोग होगा,
वहां दुकान के फर्श पर,
कार्यशाला में एक जाना पहचाना,
लेथ पर काम करता है,
और सुरक्षा के लिए प्रार्थना।

नदी का उद्‍देश्य

तुम्हारे उपहार हमारी सारी जरूरतें पूरी कर देते हैं,
फिर भी तुम्हारा पात्र हमेशा भरा रहता है,
नदी का अपना उद्‍देश्य है,
प्यास मिटाना और पापों की शुद्धि,
फिर भी इसकी धारा अनवरत,
अपने स्वामी से मिलने को बहती जाती है,
पुष्प का अपना उद्‍देश्य है,
हवा का सुगंधित करना और बालों की सज्जा,
फिर भी इसकी भीतरी चाहत तो देवी की भेंट चढना ही है।

पूजा दुनिया को गरीब नहीं बनाती,
पूजा दुनिया को अमीर नहीं बनाती,
इसके शब्दों से लोग अपने-अपने अर्थ निकाल लेते हैं,
फिर भी इनका अंतिम अर्थ तो तीन देवियों की ओर ही इंगित है,
हॉ इनका अंतिम अर्थ तो त्रिदैवी की ओर ही है।

आमने सामने

दिन गुजरते हैं, मेरे जीवन की राधा,
और मैं तुम्हारे आमने-सामने खड़ा हूं ,
हाथों में हाथ लिए,
ओ मेरे जीवन की राधा,
मैं तुम्हारे आमने-सामने खड़ा हूं ,
छाया में एकांत और मौन में,
अनुग्रहीत हृदय से,
आवश्यकताओं और विपुलताओं से भरे इस आनंदित जगत में,
मौन में हम आमने-सामने हैं,
और जब इस जगत में हमारा काम पूर्ण हो जाएगा,
तब भी हे रानियों की रानी, हम अकेले आनंदित और आमने-सामने।

यह जानता है

यह तुम्हें अपने देवता की तरह जानता है और निष्कम्प,
यह तुम्हें अपना मानता है और नजदीक आता है,
यह तुम्हें अपना शिक्षक मानता है और तुम्हारें चरणों में झुका है,
यह मित्र की तरह तुम्हारा हाथ हाथों में लिए हुए,
यह तुम्हें अपना प्रेम जानता है और अपने को भूल जाता है,
यह तुम्हें तुम्हारी तरह जानता है,
वहां खड़ा है जहां तुम चाहो,
यह तुम्हें अपना साथी जानता है।

तुम मेरी काली हो और मैं उसका अनुचर,
हमारी आमदनियां और हमारे उद्‌देश्य एक,
सुख में और दुख में,
मैं अकेला खड़ा हूं और इसीलिए तुम्हारे साथ।

खोया तारा

जब लीला शुरू हुई,
और जब सृजन नया था,
सारे तारे अपनी महिमा में पहली बार प्रकाशित हो उठे,
उन्होंने आसमान में अपनी सभा की,
और छुपाछुपउअल का खेल शुरू कर दिया,
टोकन थामों काम करो और पूजा,
खेल शुरू हुआ और एक चीखा,
ऐसा लगता है कि हमारी कड़ियां कहीं से टूट गई हैं,
हममें से एक खो गया,
गीत टूट गया और खोज शुरू हुई,
और वे निराशा से रोने लगे,
खोया हुआ सितारा सबसे अच्छा था, सबसे अच्छा,
उस दिन से उसकी खोज निरंतर चलती आई है,
और रुदन एक से दूसरे तक पहुंचता है,
उस तारे में दुनियां ने अपना सुख आनंद खो दिया।
गहनतम मौन में सितारे मुस्कुराते हैं,
और आपस में फुसफुसाते हैं,
यह तलाश व्यर्थ है हमें खेल खेलना चाहिए।

दैवी की झलक

मैं तुमसे मिला हूं, इस जीवन में और बाकी सारे जीवनों में,
मुझे नहीं लगता कि तुम मेरी आंखों से कभी ओझल हुईं,
क्षण भर के लिए भी मैं तुम्हें नहीं भूला,
तुम्हारा आनंद सदा मेरे साथ,
नींद में और स्वप्न में और जागरण के घंटों में।

मेरे दिन इस दुनियां के व्यस्त कार्यालय में गुजरते हैं,
मेरी हथेलियां रोजमर्रा के कार्यों से भरती जाती हैं,
हमेशा ऐसा लगता है कि सब कुछ मिल गया,
मुझे हर क्षण स्मरण रहने दो,
तुम्हारा आनंद सदा मेरे साथ,
नींद में और स्वप्न में और जागरण के घंटों में।

जब मैं बिस्तर के पास बैठा थका हारा और लिख रहा हूं ,
जब मैंने फर्श पर अपने शरीर को फैला लिया हो,
हमेशा ऐसा लगता है,
कि इस लंबी यात्रा में क्षणमात्र के लिए भी तुम्हें नहीं भूला,
तुम्हारा आनंद सदा मेरे साथ,
नींद में और स्वप्न में और जागरण के घंटों में।

जब मेरे कमरे साफ कर दिए गए हों,
संगीत और हास्य, गूंजता हुआ,
हमेशा ऐसा लगता है,
कि यह तुम्हारा ही घर है,
यह क्षणमात्र के लिए भी नहीं भूला,
तुम्हारा आनंद सदा मेरे साथ,
नींद में और स्वप्न में और जागरण के घंटों में।

दैवी की इच्छा

मैं पतझड़ के बादलों के अवशेषों की तरह,
आसमान में सोद्वेश्य विचरण करता।
हे सदा प्रवाहमान हवा,
तुम्हारे स्पर्श ने आद्रता नहीं दी,
ताकि गर्मी से कष्ट में पड़े लोगों को राहत मिलती,
इसलिए मैं प्रतीक्षा करता हूं ,

यह तुम्हारी इच्छा है और तुम्हारी लीला,
यह तुम्हारी इच्छा है कि खालीपन का सृजन हो,
और यह तुम्हारी ही इच्छा है कि यह खालीपन उद्देश्य और कार्यक्रम से भर जाए,
तुम्हारी ही इच्छा है कि शक्ति प्रदान करो,
और तुम्हारी ही इच्छा है कि उद्देश्य के लिए निर्देशित करो,
आश्चर्य ! तुम खेल की समाप्ति कब चाहोगी,
तुम्हीं ठण्डी फुहारों से सान्तावना देती हो,
तुम्हीं तारों भरी रात में मुस्कुराती हो,
पारदर्शी पवित्रता की ठण्डक में।

ताकत दैवी के आशीर्वाद की

बहुत से आलस्य से भरे दिनों में,
मैं समय गुजारने के लिए सोता रहा,
लेकिन यह समय भी व्यर्थ नहीं गया,
ओ काली, तुमने मेरे जीवन के हर क्षण को अपने हाथों में ले रखा है।

चीजों के हृदयों में छिपी, तुम,
बीजों को अंकुरों में बदलती हो,
कलियों को फूलों में,
फूलों को फलों में परिपक्व करती।

मैं थका था और अपने बिस्तर पर आराम करता,
मैंने कल्पना की कि सारा कार्य पूर्ण हो गया है,
प्रातः जब मैं जागा तो कामों के अम्बार लगे थे,
और तुम्हारे आर्शीवाद की शक्ती।

ओ अल्लाह ओ ब्रहमा

तुम्हारे ह्रदय में समय शुरू और समाप्त होता है,
समय अनादि है और समय अनंत है,
हे अल्ला, हे भगवान,
उसके मिनटों की गिनती कैसे करूं।
दिन गुजरते हैं, रातें गुजरती हैं,
युगों पर युग गुजरते जाते हैं,
तुम्हें मालूम है कि कैसे तुम अपने समय को एक के बाद लगाओ,
ताकि एक छोटा क्रमबद्ध नृत्य परिपूर्ण हो।

हमारे पास खोने के लिए वक्त है और पाने के लिए भी,
जब वक्त होता है तब हम एक क्रमबद्धता के लिए विलाप करते हैं,
तुम इतनी सम्पत्तिशाली हो कि देर कर सकती हो,
और इस तरह यह वह वक्त है,
जो मैंने काली को दिया जिसका वह था,
तुम्हारी वेदी सज गई,
सारे कार्य के अंत में,
न मुझे जल्दी है और न भय,
मुझे मालूम है कि तुम्हारे पास समय है।

मॉं ओ मॉं

हे मां,
मैं कामों की एक श्रृंखला बुनूंगा,
क्योंकि माता ने मुझे वे पूरा करने के लिए दिए हैं।

नक्षत्र अपनी शक्तिशाली शुभाशीषें ले आए हैं,
और मैं तो सिर्फ माध्यम हूं ,
सम्पत्ति और प्रसिद्धि राधा से आते हैं,
उन्हीं की इच्छा है सही समय और सही स्थान पर मुझे देना,
जब मैं इन्हें तुम्हारे पास भेंट करने ले आता हूं ,
तो तुम मेरे सिर पर शालीनता से हाथ रख देती हो।

मां, हे मां,
काम पूर्ण करने में लगा मैं,
पीछे मुड़कर तुम्हारी ओर न देख सका,
तुमने मुझे ख्याति दी,
वे जो तुम्हारा आदेश मानते हैं,
तुम्हारा ध्यान रख लेंगे,
ऐसी ही वह है सारी माताओं की माता, माता की तरह काम करने वाली।

बियोग का कष्ट

वियोग का कष्ट,
और मिलन का आनंद,
सारी दुनियां में फैले हैं,
और अनंत आकाश में अनगिनत रूपों को जन्म देते हैं।

यही वियोग और मिलन खुशी में झांकते हैं,
रात के मौन में सुखकर लगता है
और क्रिसमस की ठण्डी हवा सीटियां बजाती हैं,
तुम्हारे ही प्रेम का बिस्तार है,
जो मनुष्यों का कष्ट और दुख कम करता है,
तुम्हारी ही ऊर्जा है जो गीतों और वाक्यों में,
लगातार बहती है।

यौद्धा

देवी के दूत दैवी के यौद्धा
त्रिदेवी के दरबार से
बिना हथियार निकलते हैं

देवी के योद्धा
मॉ की गोद से
हथियारों के साथ बढ़ते हैं
धर्म की स्थापना में अपने हथियार
न्यौछावर करते हैं

देवी के यौद्धा
धरती मॉ की गोद में
खाली हाथ जाते हैं

देवी के योद्धा
अंतिम प्रणाम में
अस्त्र और शस्त्र, जीवन को छोड़कर
त्रिदेवी के दरबार में जीतकर जाते हैं

योद्धा आये योद्धा जीते
योद्धा गये योद्धा दिलों मे जिए
देवी के दूत देवी के योद्धा

मृत्यु मेरी दोस्त

मृत्यु , मेरी मित्र,
मेरे दरवाजे पर है,
वह मुझसे मिलने आई है,
दिन का प्रकाश है और मेरा हृदय आनंदित,
मैंने बाहें फैली ली और अपनी मित्र का स्वागत किया,
मेरी मित्र दरवाजे पर खड़ी है।

मैंने अपने हृदय की निधियों से उसके पैर पखारे,
मैं खुश हूं कि वह मुझे अपने साथ चलने के लिए कहती है,
दोपहर में मेरा नामोनिशान न छोड़ते हुए,
मजाक करते हुए मैं पूछता हूं ,
मेरी तीन देवियां कहां हैं।

समग्रता को घेरे

उतावली आशा में मुझे वे नहीं मिली,
अनावश्यक आसक्ति में भी नहीं,
मेरी चैतन्य खोज बहुत छोटी है,
एक बार जो छूट गया,
केवल पूरे चक्र के बाद मिलता है,
मेरा अचेतन अनंत,
हे मां,
उनको ढूंढते,
मैं उनके दरवाजे तक आया हूं ,
वहां मैं कंक्रीट की छत के नीचे खड़ा हूं ,
और उनके चेहरे पर निगाह उठाता हूं ,
मैं उस स्थान तक आ गया,
जहां से वह लुप्त नहीं हो सकतीं,
और न ही हमारी दृष्टि ओझल कर सकतीं हैं,
मैं अपने सोद्धेश्य जीवन के उस समुद्र में
डुबकी लगाता हुं ,
और इसे गहनतम प्रेम के हाथ में छोड़ देता हूं ,
एकदम और हमेशा के लिए तुम्हारे मधुर स्पर्श का अनुभव हुआ,
जो जीवन की समग्रता को घेरे है।

दैवी खण्डहरों मे नही रहती

दैवी, देवता उजड़े हुए मंदिरों में नहीं रहते,
वीणा के टूटे हुए तारों से कृतज्ञता का संगीत नहीं उठता,
शाम की घंटियां पूजा का वक्त तय नहीं कर देतीं,
टूटे हुए मंदिरों की हवा देवता के बारे में मौन है।

देवता उजड़े हुए मंदिरों में नहीं रहते,
वे कर्तव्यच्युतों के बीच नहीं बसते,
जहां देवताओं को धोखा दिया जाता है,
वहीं आम मनुष्य को लतियाया जाता है,
जब देवताओं को धोखा दिया जाता है,
तभी देश में गुलामी आती है।
तुम्हारे उपेक्षित मंदिर में आवारा हवा का झोंका आता है,
इसके साथ खिलते हुए फूलों की खुशबू है,
वे फूल जो तुम्हारी पूजा के लिए अब और जरूरी नहीं,
उजड़े हुए लोगों के त्योहार चुपचाप आते हैं,
पूजा की रात बिना दीप जलाए गुजर जाती है,
तुम्हारा पुराना पूजक अभी भी अनुग्रह की मांग करता है,
और उजड़े हुए मंदिर में पुजारी
के हृदय और पेट में भूख है,
बहुत सी नए पाखंडी मूर्तियों और बहुत से बदमाशों
ने मंदिर में शरण ले ली,
उन्हें लगता है कि उनका समय आ गया।
उजड़े हुए मंदिर में देवता नहीं बसते,
इनका तो ध्वस्त होना तो उचित है।
पवित्र मंदिरों का निर्माण होना है,
कर्तव्य पूरे होने हैं,
देवताओं के लिए श्रृंगारित मंदिर चाहिए,
देवता जीवन के सजक है,
देवता धर्म के सृर्जक हैं।

देवी के कार्यक्रम

मुझसे सीधे और साफ शब्द,
यही मेरी शिक्षिका की इच्छा है,
उसके ही आदेश पर,
मेरे हृदय की आवाज गीतों का रूप लेती है।

लोगों को बाजार जाने की जल्दी है,
सारे खरीददार और विक्रेता वहां मौजूद हैं,
मेरे बगीचे में फूलों के खिलने का वक्त आ गया,
मधुमक्खियों ने अपनी भनभनाहट शुरू कर दी है।

मैंने शैतानों और संतों के साथ बहुत सा वक्त गुजार दिया,
भरी दोपहर और रात के अंधकार में अपने काम को पूरा करते,
अब यह मेरे दिन की क्रीड़ा के साथी,
और रात के सहयोगी की इच्छा का वक्त है,
मुझे मालूम है कि अचानक यह बुलावा क्यों,
तुम्हारे किस क्रम के पूर्ण हिस्से की तरह।

जब मृत्यु द्वार खटखटायेगी

उस दिन जब मृत्यु मेरे दरवाजे को खटखटाएगी,
उसे देने के लिए मेरे पास क्या होगा ?
मृत्यु तो मेरी मित्र ही है,
उसके मांगने पर सभी कुछ तो उसका है,
मेरे सारे कर्म जो मैंने दिन-रात किए,
मैं उसके कहने पर उसके सामने रख दूंगा,
उस दिन जब मेरी मित्र मृत्यु मेरे दरवाजे को खटखटाएगी।

अरे मेंरे प्यारे दोस्त

ओ मेरी अच्छी मित्र,
मृत्यु ओ मृत्यु ,
हम तब मिले जबकि मेरी इच्छा हो।

मैनें हमेशा ही उसकी ओर देखा है,
उसके ही कारण मुझे जीवन के आनंद मिले,
जो भी कुछ मैं हूं ,
और जो भी कुछ मेरे पास है,
और मेरा सारा प्रेम,
हृदय की गुप्त गहराइयों में हमेशा उसी की ओर बहता रहा,
और यह हमेशा उसी की ओर बहता रहेगा,
क्योंकि मैं उसी का हूं।

काम पूरा हो गया,
फूल चुन लिए गए,
और वे तुम्हें अर्पण के लिए तैयार हैं,
काम के बाद हमारा घर छोड़ता हूं ,
और दिन के मौन में अपने मित्र से मिलता हूं।

वह दिन आयेगा

मुझे मालमू है कि एक दिन आएगा,
जब हमारे कामों का यह हिस्सा पूरा हो चुका होगा,
और हम साथ-साथ होंगें,
मौन में एक दूसरे की संगत में।

सितारे हमें रात में देखा करेंगे,
और रोज की तरह सुबह होगी,
घंटे मिनटों की तरह गुजरेंगे,
और खुशी और आल्हाद की बरसात होगी।

जब मैं इन क्षणों की ओर देखता हूं ,
समय के बंधन हट जाते है,
तुम्हारी दुनिया से निकलता प्रकाश,
हमें प्रकाशित करता है,
बहुत मुश्किल है यह प्रकाश,
बहुत बिरल है यह आनंद।

जो चीजें मुझे नहीं मिलीं,
और जो चीजें मुझे मिली,
दोनों के ही लिए तुम्हें धन्यवाद है,
मेरे पास वास्तव में कुछ भी नहीं,
और मुझे लगता है कि सब कुछ मेरा ही तो है।

मेरा कार्य मेरा उद्देश्य

मुझे मेरा काम मिल गया,
मेरे लिए शुभाशीषें दो,
मेरे भाइयो एवं मेरी बहनो,
मेरे बुजुर्गों और मेरे शिक्षको,
ताकि मैं अपने कार्य को खुशी से शुरू और पूरा कर सकूं।

मुझे मेरी सम्पदा की कुंजी वापिस मिल गई,
मुझ पर मेरे काम की सारी जिम्मेंदारी है,
मुझे रणक्षेत्र से आह्वान मिला है,
रात आई है,
रोशनियां जल गई और तलवारें म्यान से बाहर,
तुम्हारा आदेश आ गया है,
मुझे शुरू करने के लिए केवल राधा का अंतिम स्नेहपूर्ण शब्द चाहिए।

मेरा रास्ता

इस बार मेरे काम की शुरुआत के समय,
मेरे सौभाग्य की कामना करो मेरे मित्रों !
आकाश में भोर की लालिमा छा गई,
और सारा रास्ता साफ है,
मत पूछो कि मेरे पास वहां ले जाने के लिए क्या है,
मेरे यात्रा पथ में ऋषियों की शुभाशीष और आर्शीवाद है,
मैंने अपने युद्ध के वस्त्र पहन लिए,
हांलाकि रास्तें में खतरे हैं,
लेकिन मेरे मन में कोई भय नहीं,
जब मेरी रिहर्सल पूरी होगी भोर का तारा उगेगा,
जन सामान्य का संगीत मोर्चे से उठता है।

मैं सचेत हूँ

मुझे वह क्षण याद है,
जब मैंने नींद की दलहीज को पार किया,
उसी शक्ति ने मुझे इस विराट दुनिया में खोला।

जब मैंने सुबह की रोशनी देखी,
मैंने देखा कि इस दुनियां में हरेक चीज,
मेरा और काली का इंतजार करती है,
और हमारे नाम और रूप को जाने बिना,
हमें अपना मानने लगी,
फिर भी युद्ध में वही परिचित अपरिचित की तरह आयेंगे,
मुझे धर्म से प्यार है, लेकिन युद्ध से घृणा भी नहीं।

लोग कराह उठते हैं,
जबकि बायें हाथ से उनको दिया गया ले लिया जाता है,
अगले ही क्षण वे जय जयकार करते है,
जब उन्हें सही रास्तें में सान्तावना मिल जाती है।

यह मेरी दुनिया है

जब मैं वहां जाऊं,
यही मेरे पहले शब्द हों,
कि जो मैंने कहा,
उसी की जरूरत है।

प्रकाश के समुद्र में खिले हुए इस फूल के मधु को मैंने चखा है,
मैंने इसकी परीक्षा की है,
चन्द्रमा की रोशनी की ठन्डक के फैलाव में खिले हुए फूल के मधु को मैंने चखा है।

यही मेरे शब्द हों और यही मेरी दुनिया,
अनगिनत रूपों की इस दुनियां में
मेरा अपना उद्‌देश्य है और अपना खेल।

मेरा शरीर और मेरा होना,
उसके स्पर्श से हर्षित है,
जो पहुंच के बाहर है,
और यह स्पर्श निरंतर है,
और यही मेरी दुनिया।

यह जीवन उसका है

मेरा खेल उसके साथ है,
मैं उसके खेल पर कभी प्रश्न नहीं उठाता,
मुझे मालूम है उसकी हया और उसकी दृढ़ता,
मेरा जीवन उसका ही है।

मध्यरात्रि में काली ने मुझे नींद से बुलाया,
मेरे अपने ही साथी की तरह,
और मुझसे तरह-तरह की जगहों पर जाने के लिए कहा,
उन दिनों न तो जानता था और न चिन्ता करता था
उन शब्दों की जो जीवन मेरे लिए गा रहा था,
केवल मेरे मस्तिष्क ने छवियां ग्रहण कर लीं,
और मेरा हृदय उनकी धुन पर नाचने लगा,
अब जब खेल शुरू होने को है,
काली का यह अचानक दिखाई देना,
हमारा यह अचानक प्रगट होना,
दुनियां हम पर निगाहें गड़ाए हैं,
अचम्भे में अपने पूरे मौन के साथ।

हमें क्या रोक सकता है

मैं तुम्हें विजय चिन्हों से सजाऊंगा,
मेरी विजय की फूल मालाएं।
पराजित न होना तो,
मेरे लिए हमेशा सम्भव है।

मैं तुम्हारे गर्व को निश्चित ही जानता हूं ,
और मुझे तुम्हारी निष्ठाएं ज्ञात हैं,
इसी तरह ज्ञात है हृदय का संगीत,
पत्थरों का पिघलना,
सहस्त्रदल कमल,
और इसके मधु का स्वाद।

नीले आसमान से,
आंखें मुझ पर जमीं हुई हैं,
और मुझसे कार्य के बारे में पूछती हैं,
कुछ भी हमें रोक नहीं सकता,
कुछ भी,
काली के हाथों उन्हें निश्चित मृत्यु की प्राप्ति होगी।

बारम्बार कार्य करें

मैं जब कमान सम्भालता हूं ,
तो मुझे मालूम है कि काली के कमान सम्भालने का वक्त आ गया।
करने को जो कुछ है,
वह क्षणमात्र में हो जाएगा,
मेरी काली,
उनका संघर्ष ही कितना है,
अपना हाथ उठाओ
और गर्व के साथ अपनी विजय का उद्घोष करो।

जहां तुम हो,
वहां से मारना आनंदमय है,
मेरे छोटे-छोटे दिए,
हवा के हर एक छोटे झोकें से भभकते हैं,
मैं रोशनी बचाने के लिए बार-बार कोशिश करता हूं ,
और रणक्षेत्र पर निगाह रखता हूं ,
जो भी काली को भाए,
मेरी पुत्री,
आवेश के साथ आओ और वहां बुराई को समाप्त करो।

मैं बाहर आया

मैं रूपों के समुद्र की गहराइयों से बाहर निकलता हूं ,
और निराकार का मोती छोड़ देता हूं।

मैं एक बंदरगाह से दूसरे बंदरगाह तक जाता हूं ,
सारे मौसमों में चलने वाली किश्ती मेरे साथ है,
लहरों पर अपना खेल खेलने के दिन करीब हैं,
धर्म के उस युद्ध क्षेत्र में पापियों की मृत्यु देखने के दिन
जहां मशीन गनों का संगीत फैलता है,
मैं वहां अपनी काली का रथ ले जाऊंगा,
जब बिगुल अपने अंतिम प्रहार की आवाज दे,
मैं काली के पीछे ही चलूंगा,
काली ओ काली।

वह शक्ति

मेरे जीवन में मुझे हमेशा लगा,
कि वही मेरा लेख है,
वही मुझे जगह-जगह ले गई,
उसी के साथ मैंने सब अनुभव किया,
दुनिया का जीवन और अनुभूति।

उसी ने मुझे वह सब पढ़ाया जो भी मैं सीखा हूं ,
उसने मुझे गुप्त रास्ते बताए,
मेरे हृदय के सामने, उसीने कितने ही चंद्रमा दिखए
वह मुझे पूरे दिन सुख और दुख के जंगल के रहस्यों से गुजारती रही,
वही मुझे हमारे काम के बीच दोपहर में,
युद्ध के मुहाने पर ले आई हैं।

हमने आपकी प्रार्थना की, हमने अपना काम किया

मैंने लोगों को संकेत दिया कि मेरा तुमसे परिचय है,
उन्होंने मेरे सारे कार्य में अनुमान लगाए,
वे आए उन्होंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की,
उन्होंने मुझसे नहीं पूछा अनुमान लगाए,
और उन्होंने तुमसे प्रार्थना की,
मैंने तुम्हारे कुछ रहस्य लेखन में रख दिए,
ये रहस्य तुमसे निकलते हैं,
वे आए और उन्होंने मुझसे पूछा,
तुम अपना पूरा अर्थ बताओ,
मुझे मालूम है उन्हें कैसे उत्तर देना है,
मैं मुस्कुराया,
हमने तुमसे प्रार्थना की और तुम्हारे कार्य।

शक्ति स्वरूप

हमारे कार्य को घटनाओं का एक क्रम बना दो,
तुम्हें नमस्कार में,
तुम्हारी इच्छा की स्थापना में,
धर्म की स्थापना में,
हमारे ज्ञान चक्षुओं को साफ आसमान की तरफ फैलने दो,
हमें स्पष्टता दो,
शक्ति स्वरूपा के आर्शीवाद से हमारे कार्य को आगे बढ़ने दो।

कल्पना सेंगर

पारांजली

पुनर्यात्रा - गीतांजली (रविन्द्रनाथ टैगोर)

डा० कल्पना सेंगर

संपादन - नरेंद्र अग्रवाल

हिन्दी अनुवाद

डा० हरेन्द्र अग्रवाल

प्रकाशक : बंदना चौधरी